

CLASS 9

SHUKRA TARE KE SAMAN (शुक्रतारे के समान)



लेखक परिचय स्वामी आनंद का जन्म गुजरात के किमड़ी गांव में सन 1887 में हुआ उनका मूल नाम हिम्मतलाल था ।जब यह 10 साल के थे तभी कुछ साधु ने अपने साथ हिमालय ले गए और इनका नामकरण किया स्वामी आनंद । 1917 में स्वामी आनंद स्वतंत्रता आंदोलन में जुड़ गए । महाराष्ट्र में कुछ समय तक तरुण हिंद अखबार निकाला फिर बाल गंगाधर तिलक के केसरी अखबार से जुड़ गए 1970 में गांधीजी के संपर्क में आने के बाद उन्हीं के निर्देशन में नवजीवन और यंग इंडिया की प्रसार व्यवस्था संभाल ली ।इसी बहाने से गांधी जी और उनके निजी सहयोगी महादेव भाई देसाई तथा बाद में प्यारे लाल जी को निकट से जानने का अवसर मिला ।

शुक्रतारे के समान मैं के लेखक ने गांधी जी के निजी सचिव महादेव भाई देसाई की बेजोड़ प्रतिभा और व्यस्ततम दिनचर्या को उकेरा है। उन्होंने महादेव भाई की तुलना उस शुक्र तारे से की है जो सारे आकाश को जगमगा देता है। दुनिया को मुग्ध कर के अस्त हो जाता है। सन 1917 में गांधी जी ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी तक कह दिया था। जलियांवाला बाग हत्याकांड के दिनों में गांधी जी ने गिरफ्तार होते समय महादेव जी को अपना वारिस कह दिया। उन दिनों लोग गांधीजी के सामने अंग्रेजी सरकार द्वारा अत्याचारों और जुल्मों की कहानियां सुनाने आते थे। महादेव भाई उनकी संक्षिप्त टिप्पणियां बनाकर उन्हें गांधी जी से मिलवा देते थे। कॉनिकल के संपादक हार्नीमैन को देश निकालें की सजा मिलने पर यंग इंडिया साप्ताहिक में लेखों की कमी पड़ने लगी। हार्नीमैन लेखक थे इसलिए यह जिम्मेदारी गांधी जी ने ले ली बाद में उनका काम बढ़ने पर अखबार को सप्ताह में दो बार निकालना पड़ा। कमान लेखक के हाथों में आ गई।

महादेव भाई गांधी जी का सारा समय देश भ्रमण में देखने लगा। महादेव भाई गांधी जी की यात्राओं के दिन प्रतिदिन की गतिविधियों के बारे में देश विदेश के समाचार को पढ़ पर उस पर टीका टिप्पणी लिखते। तीव्र बुद्धि के कारण देशी-विदेशी समाचार पत्र वालों को लाड़ले बन गए। गांधी जी के पास जाने से पहले यह सरकार के अनुवाद विभाग में नौकरी करते थे। गांधीजी के पत्रों में महादेव जी की लिखावट होती थी। उनकी लिखावट लंबी जेट की गति लिखी जाती। लेखनी में मात्रा की भी गलती नहीं होती इसलिए गांधीजी भी अपने मिलने वालों से बातचीत को उनके नोटबुक से मिलान करने को कहते हैं वे अपने बड़े बड़े थैलों में ताजा समाचार पत्र रखा करते थे। रेलगाड़ी, रैलियों तथा सभाओं में पढ़ते थे। वे नवजीवन या यंग इंडिया के लिए लेख लिखते थे। वे इतने व्यस्त समय में अपने लिए कब वक्त निकालते पता नहीं चलता 1 घंटे में 4 घंटों का काम करते। महादेव भाई गांधी जी के जीवन में इतने रच बस गए थे कि उनकी बिना महादेव जी की अकेले कल्पना करना संभव नहीं था।

शुक्र तारे के समान
स्पर्श भाग-1 हिंदी
स्वामी आनंद

